CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 09th April 2021, Revised on 15th April 2021, Accepted 17th April 2021

आलेख

शेखावाटी बोली का परिचय

* डॉ. महेश कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी
सरस्वती शिक्षण संस्थान कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड साईन्स
फतेहपुर सीकर, भारत
ई–मेल drmdprincipal@gmail.com, मो. 9460064184

मुख्य शब्द– *शेखावाटी, अंचल, कर्मस्थली, वाटी या पट्टी आदि।*

सार संक्षेप

शेखावाटी देश में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर एक वीर प्रसविनी भूमि के नाम से सुविख्यात रही है। राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में अरावली पर्वत श्रृंखला के प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य में स्थित शेखावाटी राजस्थान का सिरमौर प्रदेश है। अंचल के सीमा पर खून बहाने वाले वो वीर पुरूष गर्व से शेखावाटी का सिर मुकुट सुशोभित करते रहे है। यहाँ के उद्योगपति मुद्रा से मण्डित पृथ्वीमण्डल पर भारत का नाम रोशन करते रहे है। यह क्षेत्र असंख्य शहीदों, मेहनतकश खेतिहारों तथा चंग की थाप के साथ बहती कर्णप्रिय स्वर लहरियों पर इतराते स्वाभिमानी लोगों की जन्म भूमि है। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली जन साधारण की भाषा को शेखावाटी बोली नाम से जाना जाता है।

परिचय

राजस्थान का वह भू–भाग जिसे शेखावाटी की संज्ञा प्रदान की जाती है वो अनेक प्रकार की विशेषताओं से मंडित है, इस अंचल की जलवायु अवश्य शुष्क है किन्तु यहाँ की जीवन पद्धति, संस्कृति व लोकाचार रसयुक्त है। इस क्षेत्र को शेखावत खाँप के राजपूतों द्वारा शासित होन के कारण मोटे तौर पर 'शेखावाटी' कहा जाता है। राव शेखा जी की यह कर्मस्थली रही है। 18 वीं शताब्दी तक प्रायः अधिकांश भाग शेखावत राजपूतों के पास रहा है, अन्य क्षेत्रों की भाँति यहाँ पर भी अनेक राजनैतिक उथल पुथल समय–समय पर होते रहे है। पुराने समय में अनेक क्षेत्र वाटी या पट्टी के नाम से जाने जाते थे। इन वाटियों या पट्टियों का नाम या तो प्रमुख शासकों के नाम पर या फिर उस क्षेत्र के किसी प्रसिद्ध स्थान के नाम पर रखा जाता था। कभी–कभी शासकों के वंश से भी भू–भाग को जाना जाता था। शेखावाटी का नामकरण भी इसी परम्परा का उदाहरण है। इस क्षेत्र का मुख्य रूप से विस्तार राजस्थान के झुन्झुनूं व सीकर जिले को ही माना जाता है किन्तु नागौर व चूरू जिलों के कुछ क्षेत्र भी इसके अन्तर्गत प्रायः इतिहासकार मानते रहे है। आज तक के ज्ञात साहित्य व इतिहास के आधार पर यह माना जा सकता है कि बांकीदास ने इस भू–भाग को सर्वप्रथम 'शेखावाटी' नाम दिया था। शेखावाटी देश में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर एक वीर प्रसविनी भूमि के नाम

से सुविख्यात रही है। राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में अरावली पर्वत श्रृंखला के प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य में स्थित शेखावाटी राजस्थान का सिरमौर प्रदेश है। अंचल के सीमा पर खून बहाने वाले वो वीर पुरूष गर्व से शेखावाटी का सिर मुकुट सुशोभित करते रहे है। यहाँ के उद्योगपति मुद्रा से मण्डित पृथ्वीमण्डल पर भारत का नाम रोशन करते रहे है। यह क्षेत्र असंख्य शहीदों, मेहनतकश खेतिहारों तथा चंग की थाप के साथ बहती कर्णप्रिय स्वर लहरियों पर इतराते स्वाभिमानी लोगों की जन्म भूमि है। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली जन साधारण की भाषा को शेखावाटी बोली नाम से जाना जाता है। किसी भी भाषा या बोली के उद्भव ओर विकास को स्पष्ट रूप से रेखांकित करना इतना आसान कार्य नहीं होता क्योंकि इनके प्रारम्भिक रूप कथ्य रूपों में उपलब्ध है जो सामग्री लिखित रूपों में प्राप्त हो रही है वो सीमित तथा अव्यवस्थित रूप में प्राप्त होती है। ये क्षेत्रीय बोलिया अपने पीछे एक लम्बा इतिहास छुपाये हुए है। पूर्ण सामग्री के अभाव में विद्वानों में इस बात पर पर्याप्त मतभेद है कि किस क्षेत्रीय बोली ने इस साहित्यिक भाषा या बोली को जन्म दिया। निःसन्देह शेखावाटी बोली प्रत्यक्षतः राजस्थानी बोलियों – मारवाड़ी, ढूँढ़ाड़ी, मेवाती, मालवी आदि से ही सम्बन्धित है। राजस्थानी बोलियों का ओर विशेषतः शेखावाटी का उत्पत्ति की दृष्टि से सम्बन्ध उत्तर भारत की किस क्षेत्रीय भाषा से है इस पर विचार करना राजस्थानी के इतिहास का प्रथम और सबसे जटिल प्रश्न है । किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि प्रागैतिहासिक वैदिक बोलियाँ ही व्यक्ति–देश–कालभेद के अनुसार विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हुई है। सभी भारतीय भाषाओं में संस्कृत की प्राधनता है, इससे ही 'प्राकृत' ओर 'अपभ्रंश' भाषाओं का विकास हुआ। राजस्थान ओर गुजरात में भी इसी क्रम में अपभ्रंश का विकास हुआ, किन्तु कुछ विशिष्टता के साथ ओर यह भी सत्य है कि हिन्दी साहित्य का आदिकालीन साहित्य का अधिकांश भाग इसी क्षेत्र में लिखा गया था। जिसमें प्रचुर मात्रा में उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण हुआ ओर यह भाषा अपने समय में भारत की प्रमुख साहित्यिक भाषा बन गई, नागर अपभ्रंश से यह विख्यात हुई ओर यह नागर अपभ्रंश राजस्थान की अपनी भाषा थी। गुजरात तब सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्णरूपेण राजस्थान का ही भाग था। इसी नागर अपभ्रंश से सन् 1000 ई. के आस–पास राजस्थानी की उत्पत्ति मानी जाती है। इस विषय में विद्वानों के दो मत है एक वर्ग नागर अपभ्रंश से उत्पत्ति मानता है तो दूसरा वर्ग गुर्जरी अपभ्रंश से राजस्थानी की उत्पत्ति मानता है, इसी गुर्जरी अपभ्रंश का एक रूप आगे चलकर 'डिंगल' नाम से विख्यात हुआ। आधुनिक विद्वानों ने दूसरे मत को अधिक स्वीकार किया है। इसका कारण यह भी है कि 6–7 वी शताब्दी से 13–14 वीं शताब्दी तक अलवर ओर शेखावाटी क्षेत्र पर गुर्जरों की एक शाखा बड़गूजर का शासन रहा है ओर कच्छावों ने इन से ही राज्य छीना था। इस प्रकार गुर्जरों के द्वारा आबाद तथा प्रभुत्व के कारण राजपूताने से लेकर गुजरात तक बोली जाने वाली भाषा का नाम उन्हीं के आधार पर 'गुर्जरी अपभ्रंश' हो गया था। इस प्रकार से शेखावाटी बोली का मूल स्रोत यही गुर्जरी अपभ्रंश माना जा सकता है। गुर्जरी अपभ्रंश के पूर्वोत्तरी रूप से शेखावाटी बोली का विकास हुआ है। प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी में ही शेखावाटी बोली का प्राचीन रूप देखा जा सकता है। शेखावाटी बोली अपने विकासक्रम में अपभ्रंश, पिंगल (ब्रज मिश्रित), अरबी–फारसी ओर अंग्रेजी शब्दावली को ग्रहण करते हुए आधुनिक आर्यभाषा शेखावाटी के रूप में सामने आई है। शेखावाटी बोली महाजनी, मुड़िया ओर देवनागरी तीनों शैलियों को अपनाते हुए अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँची है। भाषा विज्ञान के अनुसार जो भाषा विविध क्षेत्रो, भाषाओं की तात्विक विशेषताए का समाहार कर एक स्वतन्त्र भाषा या बोली के रूप में एक स्वतन्त्र इकाई का निर्माण करती है वो उतनी ही सजीव व विभाषा के रूप में दीर्घ समय तक जीवंत रहती है। शेखावाटी बोली में जहाँ एक ओर कुछ विशेषताएँ हिन्दी की मिलती है वहाँ दूसरी ओर अधिकाधिक विशेषताएँ राजस्थानी की मिलती है, जो शेखावाटी को राजस्थानी की एक विभाषा या बोली सिद्ध करने में सहायक है। इतना कुछ होते हुए भी शेखावाटी अपनी समस्त समीपवर्ती बोलियों से कुछ अलग भाषा तात्विक विशेषताएं रखती है, जिसके कारण इसको स्वतन्त्र भाषा इकाई माना जा सकता है यथा –

1. खड़ी बोली हिन्दी की आकान्त की तुलना में यह ओकारान्त भाषा है– कुत्ता–कुत्तो, मेरा–मेरो, मीठा–मीठो, खाना–खागो आदि।
2. खड़ी बोली (हिन्दी) के संयुक्त स्वर ऐ, औ शेखावाटी में इ, ई, ओ के रूप में – कैसा–किसो, पैसा–पीसो, ऐसा–इसो आदि।
3. हिन्दी की तुलना में शेखावाटी की कुछ विशेष ध्वनियाँ है, जो ध्वनिग्राम रूप में प्रतिष्ठित है – न्ह–न्हाण (नहान), ल्ह–ल्हाद्णों (पाना) ल्हुक्णो (छिपना)

4. शेखावाटी बोली में कर्त्ता कारक चिह्न का अभाव है ओर सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूपों के साथ भी बिना किसी कारक चिह्न की सहायता के प्रयुक्त होता है – मैं रोटी खाई (मैंने रोटी खाई।) छोरो पाणी दियो (लड़के ने पानी दिया।)
5. शेखावाटी बोली के कुछ शब्द अपने ही है– गंडक, भोभर, भंभूलियो, चूसो, भरूंट, खाजरू, उरणियो, उणियारो, डाफी, डाको, लीत्तरो आदि।
6. माधुर्य के लिए कई शब्दों के साथ 'डी', 'ली' , ण का प्रयोग किया जाता है – चिड़कली, मावड़ी, सहेलड़ी, प्रीतलड़ी आदि।
7. सम्मान सूचक 'जी' शब्द के विपरीत भाव देने वाला शब्द 'ती' का प्रयोग – खातणती, मालणती, धोबणती, डाकणती आदि।
8. पुरूष वाचक में 'जी' सम्मान सूचक शब्द के विपरीत भाव देने वाले शब्द – इयो– रामियो, किसनियो, भगोतियो, घीसियो लो–दामलो, पेमलो, रामलो, नेमलो आदि।

   ड़ो – समाईड़ो, रामड़ो, खातीड़ो, गुंसाइड़ो आदि।
9. 'ड़ो' शब्द का प्रयोग कहीं–कहीं स्नेह, दया या निकटता सूचक भी होता है – जवाँइड़ो, भाइड़ो, बापड़ो, साथिड़ो आदि।
10. शेखावाटी की उच्चारण सम्बन्धी विशेषता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शब्द के उदात्त और अनुदात ध्वनियों में अन्तर करते ही अर्थ भेद हो जाता है –

अनुदात	उदात
कान (कर्ण)	का, न (कृष्ण)
कोड़ (चाव–लाड़)	को, ड (कृष्ठ रोग)
नार (स्त्री)	ना, र (सिंह)
बोळो (बधिर)	बो, ळो (बहुत)

11. 'ल' ओर 'ळ' में उच्चारण भेद भी महत्वपूर्ण है –

    सूल (आसानी से, अच्छी तरह से) –सूळ (कांटा)

    पोली (थोथी) – पोळी (प्रवेश द्वार)

    आलो (गीला) – आळो (दीवार में एक भाग, घोंसला)

    खेल (तमाशा) – खेळ (पानी का स्थान, कुएं के निकट पशुओं हेतु पानी पीने का स्थान)

शेखावाटी बोली में उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त ओर भी ऐसी भाषा तात्विक विशेषताएं और गिनाई जा सकती हैं जो उसकी निकटवर्ती बोलियों को प्रभावित करती हैं और उसको एक स्वतन्त्र भाषा इकई के रूप में मान्यता प्रदान करती है –

1. 'रुपया' (हिन्दी) शब्द के दो ध्वन्यात्मक स्वरूप शेखावटी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं – 'रिपियो' और 'रूपियों।
2. 'रूदन' के लिए प्रचलित शब्द 'रोज'का क्षेत्रीय रूप बाँगरू को छोड़कर शेष सभी बोलियो में भी 'रूदन' के लिए ही है। बांगरू में 'सदैव' के लिए है।
3. 'आदत' के लि प्रचलित शेखावाटी शब्द 'बाण' उसका क्षेत्रीय रूप है जबकि बांगरू ओर हिन्दी में 'तीर' के लिए प्रयुक्त होता है।
4. 'चूहा' के लिए शेखावाटी में 'चूसो' जयपुरी में 'उन्दरो' मारवाड़ी, मेवाती में 'मूसो' शब्द प्रचलित है।
5. हिन्दी अव्यय शब्द 'कहाँ' के लिए शेखावाटी में 'कठै' शब्द का प्रयोग है , मारवाड़ी वह मेवाती में भी 'कठै' शब्द है, किन्तु जयपुरी में 'कौड़े' शब्द और बांगरू में 'कित' शब्द देखे जा सकते है।
6. हिन्दी सर्वनाम शब्द 'कुछ' के लिए शेखावाटी में 'क्यूह' किऊँ, किमै, शब्द प्रचलित हैं, अन्य समीपवर्ती बोलियों के लिए ये शब्द अपरिचित है। मारवाड़ी, जयपुरी में इसके स्थान पर 'कांई' शब्द प्रयोग में लिया जाता है।

उक्त कतिपय विभेदक उदाहरणों के अतिरिक्त अनेक और उदाहरण भी प्रस्तुत किए जा सकते है जो अन्य बोलियों से पृथक इसकी विशेषताओं दर्शाते है। शेखावाटी में 'इस–उस' के लिए 'इण–उण' सहायक क्रिया 'है' के लिए 'स', 'छ' भूतकालिक सहायक क्रिया के लिए 'था', 'थो', 'छो' जाने के लिए 'जाणो', 'जाबै', 'जावाँगा', 'जास्यां', जाँवला आदि प्रयोग से स्पष्ट है कि शेखावाटी बोली अपनी निकटवर्ती बोलियों से अलग पहचान रखती है। इन सभी विशेषताओं के आधार पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि शेखावाटी प्रदेश एक बोली – विशेष का क्षेत्र है, जहाँ की बोली का एक स्वतन्त्र नाम शेखावाटी अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण अपना सार्थक नाम सिद्ध करने योग्य है।

सन्दर्भ

1. शेखावाटी का नवीन इतिहास – डॉ. रतनलाल मिश्रा
2. सीकर का इतिहास – श्री झाबरमल शर्मा
3. खेतड़ी का इतिहास – श्री झाबरमल शर्मा
4. शेखावाटी प्रकाश – रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री
5. शेखावाटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन – डॉ. कैलाश चन्द्र अग्रवाल
6. शेखावाटी भाषा और साहित्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

**** Corresponding Author***

डॉ. महेश कुमार

सहायक आचार्य, हिन्दी

सरस्वती शिक्षण संस्थान कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड साईन्स

फतेहपुर सीकर, भारत

ईमेल– drmdprincipal@gmail.com, मो.– 9460064184